Minutes of the Meeting

Ad-hoc UG and PG Board of Studies
Held on 8-05-2026 at 11:00 AM

Dept. of Indian Knowledge and Language
Gurugram University, Gurugram

(Established by the State Legislature Act 17/2017)

Sector-51, Gurugram -122003 (Haryana)

Minutes of the Meeting

Ad-hoc UG and PG Board of Studies
Held on 8-05-2026 at 11:00 AM

गुरुग्राम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम के विधि एवं मानविकी संकाय के अंतर्गत एड-हॉक स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संशोधन समिति (BoS) की बैठक का आयोजन दिनांक 08 मई 2026 को प्रातः 11:00 बजे भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभागाध्यक्ष के कार्यालय में किया गया।

इस बैठक में भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग के अंतर्गत संचालित स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों –स्नातक (बी.ए.) विशिष्ट (मेजर), स्नातक (बी.ए.) वैकल्पिक (मल्टी-डिसिप्लिनरी)- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम, स्नातकोत्तर (एम.ए.) संस्कृत, सम्पूर्ण पाठ्यक्रम, स्नातकोत्तर (एम.ए.) हिन्दू अध्ययनसम्पूर्ण पाठ्यक्रम के संशोधित स्वरूप पर विस्तृत चर्चा की गई।

यह चर्चा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुरूप प्रस्तावित नवीन संशोधनों को ध्यान में रखते हुए संपन्न हुई। बैठक का शुभारंभ ऑनलाइन माध्यम से प्रातः 11:00 बजे हुआ तथा यह दोपहर 4:00 बजे तक चली।

उपस्थित सदस्य:

1.	**प्रो. राकेश कुमार योगी,** भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग गुरुग्राम विश्वविद्यालय गुरुग्राम हरियाणा	अध्यक्ष
2.	**प्रो. ओमनाथ विमली**, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	वाह्य सदस्य
3	**प्रो. पंकज कुमार मिश्र,** संस्कृत विभाग, सेन्ट स्टीफेन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय	वाह्य सदस्य
4	**डॉ. मीनाक्षी पाण्डेय,** भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग गुरुग्राम विश्वविद्यालय गुरुग्राम, हरियाणा	सदस्य

मीनाक्षी सुप्रियासंधू

5	**डॉ. सुप्रिया संजू,** भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग गुरुग्राम विश्वविद्यालय गुरुग्राम, हरियाणा	सदस्य
6	**डॉ. विजय नारायण शुक्ल,** भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग गुरुग्राम विश्वविद्यालय गुरुग्राम, हरियाणा	सदस्य

बैठक के प्रारम्भ में संयोजक ने पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। तत्पश्चात् कार्यसूची के बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया तथा विस्तृत विचार-विमर्श के उपरान्त निम्नलिखित निर्णय लिए गए।

Item No. UG/PGBOS/01 :

Agenda: 1. स्नातक संस्कृत विशिष्ट(मेजर),सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

2. स्नातकसंस्कृतवैकल्पिक(मल्टी डिसिप्लिनरी), सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

Resolution/ Decision: सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के संशोधित रूप पर चर्चा कर अन्तिम रुपरेखा प्रदान की गयी

Item No UG/PGBOS /02

Agenda: स्नातकसंस्कृत, वैकल्पिक पाठ्यक्रम (POOL COURSE)- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

Resolution/ Decision: उपरोक्त सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के संशोधित रूप को पाठ्यक्रम समितिद्वारा स्वीकृति प्रदान की गयी।

Item No UG/PGBOS /03

Agenda: 1.एम.ए. (संस्कृत), सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,

2.वैकल्पिक पाठ्यक्रम(POOL COURSE) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

विजय मीनाक्षी सुप्रियासंजू

Resolution/ Decision: उपरोक्त सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के संशोधित रूप को पाठ्यक्रम समिति द्वारा स्वीकृति प्रदान की गयी।

Item No UG/PGBOS /04

Agenda: 1.एम.ए.हिन्दू अध्ययन, सम्पूर्ण पाठ्यक्रम,
2. वैकल्पिक पाठ्यक्रम(POOL COURSE)

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम

Resolution/ Decision: उपरोक्त सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के संशोधित रूप को पाठ्यक्रम समिति द्वारास्वीकृति प्रदान की गयी।

विजय

डॉ. विजय नारायण शुक्ल

(सदस्य)

सुप्रिया संजू

डॉ. सुप्रिया संजू

(सदस्य)

मीनाक्षी

डॉ. मीनाक्षीपाण्डेय

(सदस्य)

Joind online

प्रो. पंकज कुमार मिश्र योगी(वाह्य सदस्य)

Joind online

प्रो. ओमनाथ विमली

(वाह्य सदस्य)

राकेश कुमार

प्रो. राकेश कुमार

(अध्यक्ष)

NEP and Learning Outcome-based Curriculum Framework (LOCF)

For

M.A, Sanskrit

(To be effective from the Academic Session 2026)

Department of Indian Knowledge and Languages

Gurugram University, Gurugram

(A State Govt. University Established Under Haryana Act 17 of 2017)

M.A. Sanskrit
Page No – 1 – 58

विषयसूची

S. No. Particulars	Particulars	Page No.
1	पृष्ठभूमि	03
	व्यवसाय के अवसर	04
2	कार्यक्रम शैक्षिक परिणाम	05
3	कार्यक्रम परिणाम	06
4	कार्यक्रम-विशिष्ट परिणाम	07
5	Postgraduate Attributes	08
6	Qualification Descriptors	10
7	Scheme of Programme	11
8	Details of courses	12
9	Learning outcome Index	14
10	Syllabus	15

पृष्ठभूमि

स्नातकोत्तर संस्कृत

M.A. संस्कृत कोर्स संस्कृत भाषा, साहित्य और फिलॉसफी की एडवांस्ड जानकारी और समझ देने के लिए बनाया गया है। इसका मकसद संस्कृत की किताबों में सुरक्षित भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के लिए ज्ञान और गहरी समझ बढ़ाना है। यह कोर्स उन स्टूडेंट्स के लिए बहुत अच्छा है जिन्हें संस्कृत की बेसिक जानकारी है और जो क्लासिकल और कंटेंपररी संस्कृत साहित्य, लिंग्विस्टिक्स और फिलॉसफी में अपनी पढ़ाई आगे बढ़ाना चाहते हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ

संस्कृत, जिसे भारत की सांस्कृतिक भाषा कहा जाता है, साहित्य, दर्शन , विज्ञान और धर्म जैसे अलग-अलग क्षेत्रों में ज्ञान के बड़े भंडार का माध्यम रही है। संस्कृत की पढ़ाई से पुराने भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक विषयों में विद्यमान ज्ञान के भंडार का पता चलता है, जिसने न सिर्फ भारतीय उपमहाद्वीप बल्कि दुनिया के दूसरे हिस्सों पर भी असर डाला है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के पठन, लेखन तथा वाचन कौशल में उच्च स्तर की प्रवीणता विकसित करना, ताकि वे भाषा का प्रभावी एवं शुद्ध प्रयोग कर सकें।
- संस्कृत के काव्य, नाटक एवं गद्य साहित्य की साहित्यिक एवं सौन्दर्यपरक विशेषताओं का सम्यक् आस्वादन एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।
- चिंतन परंपरा को आकार देने वाले प्रमुख दार्शनिक ग्रंथों एवं सिद्धांतों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करने की योग्यता विकसित करना।
- संस्कृत ग्रंथों के अकादमिक अध्ययन, समालोचनात्मक विश्लेषण तथा स्वतंत्र अनुसंधान के लिए आवश्यक शोध कौशलों का विकास करना।
- संस्कृत साहित्य के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भों की समझ विकसित करना तथा समकालीन भारतीय संस्कृति पर उसके प्रभाव का बोध कराना।

पाठ्यक्रम संरचना

एमसंस्कृत पाठ्यक्रम सामान्यतः दो वर्षों का होता है .ए., जिसे चार सेमेस्टरों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर में अनिवार्य)Core) तथा वैकल्पिक)Elective) पाठ्यक्रमों का समावेश होता है, जो संस्कृत अध्ययन के विभिन्न आयामों को समाहित करते हैं। यह पाठ्यक्रम इस प्रकार निर्मित किया गया है कि इसमें शास्त्रीय)Classical) एवं आधुनिक)Modern) संस्कृतदोनों के संतुलि—त अध्ययन पर विशेष बल दिया जा सके।

व्यवसाय के अवसर
एम.ए. संस्कृत पाठ्यक्रम

एम.ए. संस्कृत पाठ्यक्रम के स्नातकों के लिए विविध एवं व्यापक करियर के अवसर उपलब्ध हैं, जिनमें प्रमुखतः निम्नलिखित क्षेत्र सम्मिलित हैं—

- शैक्षणिक क्षेत्र (Academia): विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यापन तथा शोध से संबंधित पदों पर कार्य करने के अवसर।
- अनुवाद एवं व्याख्या (Translation and Interpretation): संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद तथा प्राचीन पांडुलिपियों की व्याख्या एवं भाष्य निर्माण में व्यावसायिक संभावनाएँ।
- सांस्कृतिक संरक्षण (Cultural Preservation): संग्रहालयों, अभिलेखागारों एवं सांस्कृतिक संस्थानों में संस्कृत धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े दायित्व।
- प्रकाशन क्षेत्र (Publishing): शास्त्रीय एवं अकादमिक ग्रंथों से संबंधित प्रकाशन संस्थानों में संपादन, लेखन एवं अन्य सृजनात्मक कार्यों के अवसर।
- सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाएँ (Government and Non-Governmental Organizations): सांस्कृतिक विभागों, शोध संस्थानों तथा संस्कृत-सम्बद्ध परियोजनाओं पर कार्यरत गैर-सरकारी संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य करने की संभावनाएँ।

अंततः, एम.ए. संस्कृत पाठ्यक्रम एक समृद्ध एवं ज्ञानवर्धक शैक्षणिक यात्रा है, जो न केवल भाषा एवं साहित्य की गहन समझ प्रदान करता है, अपितु विद्यार्थियों को प्राचीन भारत की सनातन ज्ञान-परंपरा एवं सांस्कृतिक वैभव से भी सशक्त रूप से जोड़ता है।

कार्यक्रम शैक्षिक परिणाम (Programme Educational Outcomes)

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम इस प्रकार अभिकल्पित है कि यह विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा, साहित्य, दर्शन एवं संस्कृति के क्षेत्र में उच्च स्तरीय ज्ञान एवं कौशल से सुसज्जित करे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्कृत अध्ययन की समृद्ध परंपरा तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता के प्रति गहन समझ विकसित करना है।
एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम के पूर्ण होने पर विद्यार्थी—

PEO	Description
PEO-1	संस्कृत भाषा के उन्नत पठन, लेखन एवं वाचन कौशल में दक्षता प्राप्त करेंगे।
PEO-2	संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं—काव्य, नाटक एवं गद्य—का सम्यक् अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

PEO-3	भारतीय दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों एवं ग्रंथों का गहन एवं समालोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
PEO-4	प्राचीन ग्रंथों, पांडुलिपियों एवं स्रोतों के अध्ययन, अनुवाद एवं व्याख्या में दक्षता प्राप्त करेंगे।
PEO-5	अनुसंधान की आधुनिक विधियों का प्रयोग करते हुए स्वतंत्र एवं गुणवत्ता-सम्पन्न शोध कार्य करने में समर्थ होंगे।
PEO-6	संस्कृत साहित्य के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भों को समझते हुए उनके समकालीन महत्व का आकलन कर सकेंगे।
PEO-7	नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं बौद्धिक परिपक्वता का विकास करते हुए समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम होंगे।

कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes - POs)

एम.ए. (**Master of Arts**) कार्यक्रम के परिणाम विभिन्न विषयों के अनुसार कुछ भिन्न हो सकते हैं, तथापि सामान्यतः इनका उद्देश्य विद्यार्थियों में चयनित अध्ययन क्षेत्र से संबंधित समग्र ज्ञान एवं विविध कौशलों का विकास करना होता है। निम्नलिखित सामान्य कार्यक्रम परिणाम अधिकांश एम.ए. कार्यक्रमों पर लागू होते हैं—

PO	Description
PO-1	अपने विषय के मूलभूत तथा उन्नत सिद्धांतों, अवधारणाओं एवं प्रवृत्तियों का गहन ज्ञान प्राप्त करना।
PO-2	आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि का विकास करना, जिससे जटिल विषयों का समुचित मूल्यांकन किया जा सके।
PO-3	प्रभावी संप्रेषण कौशल (मौखिक एवं लिखित) में दक्षता प्राप्त करना।
PO-4	अनुसंधान कौशलों का विकास करना तथा स्वतंत्र रूप से शोध कार्य करने की क्षमता अर्जित करना।
PO-5	बहुआयामी दृष्टिकोण (Interdisciplinary Approach) को अपनाते हुए विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करना।
PO-6	नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक आचरण की समझ विकसित करना।

PO-7	समकालीन मुद्दों एवं चुनौतियों के प्रति संवेदनशीलता एवं समाधान-उन्मुख दृष्टिकोण विकसित करना।
PO-8	सूचना प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक उपकरणों के उपयोग में दक्षता प्राप्त करना।
PO-9	वैश्विक एवं स्थानीय परिप्रेक्ष्य में अपने ज्ञान एवं कौशल का प्रभावी अनुप्रयोग करने में सक्षम होना।
PO-10	आजीवन अधिगम (**Lifelong Learning**) की प्रवृत्ति विकसित करना, जिससे निरंतर ज्ञानार्जन संभव हो सके।

<u>कार्यक्रम-विशिष्ट परिणाम (Programme Specific Outcomes - PSOs)</u>

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम इस प्रकार निर्मित है कि यह विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा, साहित्य, दर्शन एवं संस्कृति का उन्नत एवं गहन ज्ञान प्रदान करे। इस कार्यक्रम के सफल समापन पर विद्यार्थी निम्नलिखित विशिष्ट परिणाम प्राप्त करेंगे—

PSO	**Description**
PSO-1	संस्कृत भाषा के उन्नत व्याकरण, पठन, लेखन एवं वाचन कौशल में उच्च दक्षता प्राप्त करेंगे।
PSO-2	वेद, उपनिषद, महाकाव्य, नाटक एवं अन्य शास्त्रीय ग्रंथों का गहन अध्ययन एवं समालोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
PSO-3	भारतीय दर्शन की प्रमुख शाखाओं—जैसे सांख्य, योग, न्याय, वेदांत आदि—के सिद्धांतों को समझने एवं उनकी व्याख्या करने में दक्ष होंगे।
PSO-4	प्राचीन पांडुलिपियों एवं संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद, संपादन एवं भाष्य-लेखन में प्रवीणता प्राप्त करेंगे।
PSO-5	संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भों की सम्यक् समझ विकसित करेंगे।
PSO-6	आधुनिक संदर्भों में संस्कृत की प्रासंगिकता को पहचानते हुए उसके व्यावहारिक एवं अनुप्रयुक्त पक्षों का अध्ययन कर सकेंगे।

PSO-7	अनुसंधान पद्धतियों का समुचित प्रयोग करते हुए स्वतंत्र एवं गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य करने में सक्षम होंगे।
PSO-8	संस्कृत अध्ययन के माध्यम से नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं बौद्धिक परिपक्वता का विकास करेंगे।

योग्यता वर्णन (Qualification Descriptors)

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम के लिए योग्यता-वर्णन उन अपेक्षित ज्ञान, कौशलों एवं दक्षताओं को स्पष्ट करते हैं, जिन्हें विद्यार्थी पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर अर्जित करते हैं। ये वर्णन सुनिश्चित करते हैं कि स्नातक संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में विभिन्न शैक्षणिक एवं व्यावसायिक अवसरों के लिए पूर्णतः सक्षम हों।

एम.ए. संस्कृत कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी—

- संस्कृत भाषा का उन्नत ज्ञान प्रदर्शित करेंगे, जिसमें व्याकरण, वाक्य-विन्यास (Syntax), ध्वनिविज्ञान (Phonetics) एवं शब्दावली का समुचित बोध सम्मिलित होगा।
- वैदिक, महाकाव्य, शास्त्रीय एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य का व्यापक एवं गहन ज्ञान अर्जित करेंगे।
- प्रमुख संस्कृत ग्रंथों के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक संदर्भों की सम्यक् समझ विकसित करेंगे।
- विविध संस्कृत ग्रंथों का समालोचनात्मक विश्लेषण एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे तथा उपयुक्त शैक्षणिक पद्धतियों का प्रयोग करेंगे।
- भारतीय बौद्धिक परंपरा के व्यापक संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक एवं दार्शनिक ग्रंथों एवं परंपराओं का मूल्यांकन एवं तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- स्वतंत्र अनुसंधान करने, शोध-प्रश्न निर्धारित करने तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रभावी उपयोग करने में दक्ष होंगे।
- संस्कृत के पठन, लेखन एवं वाचन में प्रवीणता प्रदर्शित करेंगे।
- संस्कृत ग्रंथों का यथार्थ एवं सुसंगत अनुवाद एवं व्याख्या करेंगे, जिसमें भाषिक सूक्ष्मताओं एवं सांस्कृतिक संदर्भों का समुचित ध्यान रखा जाएगा।
- संस्कृत साहित्य एवं दर्शन से संबंधित विषयों पर शोध-पत्र, प्रतिवेदन एवं प्रस्तुतियाँ तैयार करने एवं प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।
- शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संदर्भों के अनुरूप प्रभावी मौखिक एवं लिखित संप्रेषण कौशल का प्रदर्शन करेंगे।
- शोध एवं शैक्षणिक परिवेश में स्वतंत्र रूप से तथा सहयोगात्मक ढंग से कार्य करने की क्षमता विकसित करेंगे।

- संस्कृत ज्ञान के अध्ययन एवं प्रसार में नैतिक सिद्धांतों एवं सांस्कृतिक संवेदनशीलता का पालन करेंगे।
- आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान एवं बौद्धिक अन्वेषण के ऐसे कौशल विकसित करेंगे, जो विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में भी उपयोगी सिद्ध होंगे।
- संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति आजीवन रुचि एवं सम्मान की भावना का विकास करेंगे।
- संस्कृत ग्रंथों में निहित भारतीय सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत की गहन एवं सूक्ष्म समझ विकसित करेंगे।
- अपने अध्ययन एवं शोध के प्रति आत्म-चिंतनशील एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाएँगे।
- शैक्षणिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों के प्रति अनुकूलनशीलता एवं धैर्य का परिचय देंगे।

पात्रता (Eligibility)

अभ्यर्थी के पास किसी भी विषय में स्नातक (Bachelor's) उपाधि होना अनिवार्य है, जिसमें न्यूनतम 50% अंक (हरियाणा के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/दिव्यांग अभ्यर्थियों के लिए 47.5% अंक) प्राप्त होना आवश्यक है।

MA Sanskrit
(Scheme PG A2: Postgraduate Programmes
(Course work + Research)

Semester 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
						Core Course(s)								
CC-A01	**वैदिक भाषा एवं साहित्य**	251/SKT/CC101	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A02	साहित्य: नैषधीयचरित, और शिशुपालवधम्	251/SKT/CC102	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A03	**काव्यशास्त्र**: 1 **काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण**	251/SKT/CC103	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
						Discipline Specific Elective Courses								
DSE-01	**व्याकरण**: **लघुसिद्धांत कौमुदी**- 1	251/SKT/DS101	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
						Multidisciplinary Course(s)								
MDC-01	ज्योतिष शास्त्र-1	251/HS/MD101	2	0	1	2	0	1	3	15	35	5	20	75
						Ability Enhancement Course(s)								
AEC-01	**व्यावहारिक संस्कृत-1**	251/SKT/AE101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50
						Value-added Course(s)								
VAC-01	**संस्कृत साहित्य में संस्कृति और**	251/SKT/VA101	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50

	सभ्यता की रूपरेखा													
Total Credits									22					

Semester 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
									Core Course(s)					
CC-A04	**भारतीय दर्शन- 1**	251/SKT/CC201	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A05	नाट्य साहित्य	251/SKT/CC202	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A06	महाभाष्य एवं वाक्यपदीय	251/SKT/CC203	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
									Discipline Specific Elective Courses					
DSE-02	भाषाविज्ञान एवं अभिलेख	251/SKT/DS201	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
									Multidisciplinary Course(s)					
MDC-02	**Introduction to Nāṭyaśāstra**	241/HS/MD202	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
									Ability Enhancement Course(s)					
AEC-02	**व्यावहारिक संस्कृत-2**	251/SKT/AE201	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50
									Skill Enhancement Course(s)					
SEC-01	**संस्कृत पत्रकारिता**	251/SKT/SE201	1	1	0	1	1	0	2	5	20	5	20	50
Total Credits									**23**					

Semester 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A07	दर्शन-2	251/SKT/CC301	3	1	0	3	1	0	4.	30	70	0	0	100
CC-A08	साहित्य:- हर्षचरित एवं कादंबरी	251/SKT/CC302	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A09	स्मृति साहित्य	251/SKT/CC303	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
Discipline Specific Elective Courses														
DSE-03	उपनिषद्-साहित्य	251/SKT/DS301	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
Multidisciplinary Course(s)														
MDC-03	Indian Aesthetics	251/HS/MD301	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
Skill Enhancement Course(s)														
SEC-02	शोध-पत्र लेखन के मूल कौशल	251/SKT/SE301	1	0	1	1	0	1	2	5	20	5	20	50
Value-added Course(s)														
VAC-02	भारतीय कला (भारतीय ज्ञान परम्परा)	**251/SKT/VA301**	1	1	0	1	1	0	2	15	35	**0**	**0**	**50**
Seminar														
Seminar		**251/SKT/SM301**	**1**	0	**1**	**1**	0	**1**	**2**	**15**	0	**35**	0	**50**
Internship/Field Activity#														
Internship		**251/SKT/IN301**	0	0	4	0	0	4	**4**	0	0	**30**	**70**	**100**

Total Credits									28					

Semester 4

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
Core Course(s)														
CC-A10	दर्शन 3	251/SKT/CC401	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
CC-A11	काव्यशास्त्र 2: ध्वन्यालोक एवं काव्यप्रकाश	251/SKT/CC402	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100
Discipline Specific Elective Courses														
DSE-04	शोध विज्ञान (DSE)	251/SKT/DS401	2	0	2	2	0	2	3	25	50	0	0	75
Multidisciplinary Course(s)														
MDC-04	भारतीय अनुष्ठान एवं संस्कार	251/HS/MD401	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75
Ability Enhancement Course(s)														
AEC-03	व्यावहारिक संस्कृत-3	251/SKT/AE401	1	1	0	1	1	0	2	15	35	0	0	50
Community Engagement/Field Work/Survey/Seminar														
Seminar		251/SKT/DI401	2	0	4	2	0	4	6	50	0	100	0	150
Total Credits									22					

1ST SEMESTER
M. A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER 1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
cc-A01	**वैदिक भाषा एवं साहित्य**	251/SKT/CC101	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम वैदिक साहित्य, व्याकरण और व्युत्पत्ति विज्ञान के अध्ययन के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें सैद्धांतिक समझ को व्यावहारिक अनुप्रयोग के साथ जोड़ा जाता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को ऋग्वेद से लेकर वेदांग निरुक्त तक वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना है। इसमें वैदिक देवताओं और वैदिक ज्ञान, विशेष रूप से ब्रह्मांड की रचना और समाज के सुधार के बारे में, को गहराई से जानने के लिए ऋग्वेद के कुछ महत्वपूर्ण श्लोक शामिल हैं। निरुक्त के कुछ अंशों का अध्ययन वैदिक व्युत्पत्ति विज्ञान को समझने में मदद करता है, जबकि वैदिक व्याकरण वैदिक भाषा की विशिष्टता को समझाता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives)

- छात्रों को वैदिक संस्कृत की मौलिक विशेषताओं से परिचित कराना।
- वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की भाषिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समीक्षा कराना।
- वैदिक साहित्य में प्रयुक्त छंद, व्याकरण, निरुक्त, एवं भाषा की विशेषताओं का अध्ययन कराना।
- वैदिक कालीन दर्शन, देवता, यज्ञ, सामाजिक संरचना आदि की समझ को विकसित करना।
- वैदिक मंत्रों के भाषिक-सांस्कृतिक महत्व को समझना।

इकाई: 1 सामान्य परिचय

- काल-निर्धारण:
  - ➢ भारतीय परम्परागत विचार
  - ➢ बालगङ्गाधर तिलक, अविनाशचन्द्र दास, दयानन्द सरस्वती,
  - ➢ मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, एम. विन्टरनिट्ज,

- संहिता साहित्य , ब्राह्मण-साहित्य
- प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्रिष्टोम, दर्शपौर्णमास, पञ्चमहायज्ञ
    - आरण्यक साहित्य
    - उपनिषद्-साहित्य
    - वेदाङ्ग: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई: 2

- **ऋग्वेद**- अग्नि-1.1, 1.25(सूर्य), 2.12 (इंद्र), 3.33 (विश्वामित्र नदी), 3.6 (उषा), 10.90 (पुरुष), 10.125 (वाक्), 10.129 (नासदीय)
- **यजुर्वेद**- शिवसंकल्प अ. 34 (1-6)
- **वैदिक व्याकरण:** वैदिकसंधि,   पदपाठ, वैदिक छन्द

इकाई: 3

- **निरुक्त** अध्याय-1: चतुर्विध पद विभाग , भावविकार, शब्दनित्यत्व-विचार, मंत्रों की सार्थकता, निरुक्त-प्रयोजन, निर्वचन-सिद्धांत

इकाई: 4

- **निरुक्त:** अध्याय: 2 (केवल व्युत्पत्तियाँ) निरुक्त,
  अध्याय: 7 (त्रिविध मंत्र, मंत्राभिप्राय, तिस्र देवता)

अनुशंसित पठन सामग्री

मूलग्रन्थः

1. ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्यसहिता), भाग 1 - 4, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ।
2. ऋक्सूक्तसंग्रह - (सम्पादक) हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भडार, मेरठ ।
3. वेदसमुल्लास - (सम्पादक) सत्यभूषण योगी एबं वन्दिता मधुहासिनी अरोड़ा, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी, 2002,
4. वेदवल्लरी - (सम्पादक) पुष्या गुप्ता, ईस्ट्न बुक लिकर्स, दिल्ली, 2004
5. निरुक्तम् (कश्यप्रजापतिकृत-निघण्टुआाष्यरूपम्), पं. मुकुन्द झा बख्शी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिछान, दिल्ली, 2012.
6. निरुक्त - यास्क (सम्पादक) प्रो. उमाशंकर शर्मा "ऋषि", चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2001
7. निरक्त-पञचाध्यायी - (व्याख्याकार) महामहोपाध्याय छज्जूराम शास्त्री, मेहरचन्द लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स. दिल्ली, 1985.
8. निरुक्त - यास्क, टीकाद्वय-सहित (सम्पादक) लक्ष्मणसरूप, भाग I-II, दिल्ली, 1982.
9. निरुक्त के पाँच अध्याय - (सम्पादक एवं अनुवादक) पं. शिवनारायण शास्त्री, इंडोलोजिकल बुक हाऊस, दिल्ली, 1972.
10. ऋग्वेद, सायण-भाष्य-सहित, भाग 1-5 (प्र. सम्पादक), नारायण शर्मा सोनटक्के, वैदिक संशोधन मंडल,

पूना, 1933-51.

1 1. ऋग्वेद संहिता - (सम्पादक) श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, वैदिक स्वाध्याय मंडल, पारडी, 1936.

12, ऋग्वेद संहिता - वंकटमाधव भाष्य सहित, (सम्पादक) लक्ष्मणसरूप, लाहौर, 1939

सहायकग्रन्थः

1. वैदिक व्याकरण, उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2003
2. वैदिक व्याकरण, राम गोपाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. ईशादि नौ उपनिषद- गीता प्रेस गोरखपुर
4. Nighantu and the Nirukta (Critically Edited with English Tr.), Lakshman Swaroop, MLBD, Delhi, 1967
5. Vedic Mythology (Vaidika Devashastra), AA Macdonell, MLBD, Delhi, 1962

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- वेदों की कुछ मूलभूत अवधारणाओं की बुनियादी समझ विकसित करेंगे।
- प्राचीन और आधुनिक टीकाकारों की कुछ प्रसिद्ध टीकाओं के अनुसार वैदिक ऋचाओं का अर्थ समझाने में सक्षम होंगे।
- निरुक्ति या व्युत्पत्ति के अनुप्रयोग के माध्यम से वैदिक ऋचाओं के सार को समझने में निरुक्त की भूमिका की सराहना कर सकेंगे।
- वैदिक स्वर और व्याकरण के ज्ञान के साथ वैदिक मंत्रों को उनके वास्तविक रूप में सुनाने का प्रयास करेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक-** 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** होगा, जो **14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार** प्रश्न पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 14 अंकों** का होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

1ST SEMESTER
M. A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER 2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A02	साहित्य: नैषधीयचरितम् एवं शिशुपालवधम्	251/SKT/CC102	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम संस्कृत के महान महाकवियों – **श्रीहर्ष** एवं **माघ** की काव्यकृतियों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रदान करता है। **नैषधीयचरित** और **शिशुपालवधम्** — ये काव्य संस्कृत महाकाव्य परंपरा में शृंगार एवं वीर रस के अद्वितीय उदाहरण हैं। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र इन ग्रंथों की काव्यगत विशेषताओं, भाषिक सौंदर्य, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण तथा दर्शन के संकेतों को समझने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- विद्यार्थी नैषधीयचरितम् एवं शिशुपालवधम् के कथानक, पात्रों तथा प्रमुख प्रसंगों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी दोनों महाकाव्यों में प्रयुक्त रस, अलंकार, रीति, छन्द तथा काव्यशैली का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत महाकाव्य-परम्परा में श्रीहर्ष एवं माघ के साहित्यिक योगदान तथा काव्यवैशिष्ट्य का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी दोनों ग्रन्थों के माध्यम से संस्कृत साहित्य की काव्यगत, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परम्पराओं को समझ सकेंगे।

इकाई 1: शिशुपालवधम् – प्रथम सर्ग (1–20)

- माघ का परिचय एवं शिशुपालवध की पृष्ठभूमि

इकाई 02: शिशुपालवधम् – प्रथम सर्ग (21-40)

- शेष कथावस्तु का परिचय
- माघे सन्ति त्रयोगुणाः, घण्टामाघ

इकाई 03: नैषधीयचरितः प्रथम सर्ग (पद्य सं. 1-20)

- श्रीहर्षः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई 04: नैषधीयचरित प्रथम सर्ग (पद्य सं. 21-40),

- अवशिष्ट कथावस्तु का परिचय
- नैषधं विद्वदौषधम्

अनुशंसित पठन सामग्री

मूल ग्रन्थ :

1. नैषधीयचरितम् - दीपशिखा, रामनारायणलालं बेनीप्रसाद, इलाहाबाद ।
2. नैषधीयचरितम् - मोहनदेव पंत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
3. नैषधीयचरितम् - सुरेंद्रदेव शास्त्री, गोकुलदास संस्कृतग्रन्थमाला, बाराणसी ।
4. नैषधीयचरितम - सूर्यदेव शास्री, चौखम्बा ओरियण्टालिया, वाराणसी, 1975
5. नैषधीयचरितम् - शेषराज शर्मा रेमी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1983

7. शिशुपालवधम् – माघ (मल्लिनाथटीका सहित)

8. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल – *संस्कृत साहित्य का इतिहास*

9. K. Krishnamoorthy – *Essays in Sanskrit Criticism*

10. Dr. Gaurinath Shastri – *Studies in Sanskrit Mahakavya*

11. Sanskrit Poetics – K. Krishnamoorthy / Raghavan

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- छात्र नैषध और शिशुपालवध के चयनित सर्गों और श्लोकों का भाषिक एवं साहित्यिक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत महाकाव्य परंपरा के तीन भिन्न रसों के प्रभाव एवं उपयोग की स्पष्ट समझ विकसित होगी।
- वे श्रीहर्ष, अश्वघोष, और माघ की काव्यशैली, उद्देश्य, और रचनाशक्ति में अंतर स्पष्ट रूप से समझ पाएँगे।
- छात्र श्लोकों का समास-विग्रह, धातु-पहचान, छंद-विश्लेषण आदि तकनीकी पक्षों को भी आत्मसात कर सकेंगे।
- छात्र काव्य के माध्यम से धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारों को व्याख्यायित करना सीखेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

1ST SEMESTER
M. A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER 3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A03	**काव्यशास्त्र-1: काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण**	251/SKT/CC103	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम संस्कृत काव्यशास्त्र की दो प्रमुख एवं सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रंथों" - साहित्यदर्पण) "विश्वनाथकृत (एवं "काव्यप्रकाश) "मम्मटकृत (के अध्ययन पर आधारित है। इन ग्रंथों के माध्यम से छात्र रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, अलकार, औचित्य, और प्रबंध की परिकल्पनाओं को शास्त्रीय और समकालीन दृष्टिकोण से समझेंगे।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल संस्कृत काव्यशास्त्र की गूढ़ सिद्धांतों से परिचित कराना है, बल्कि उन्हें समालोचनात्मक दृष्टिकोण, काव्य की सौंदर्यानुभूति तथा आधुनिक साहित्यिक विमर्शों से जोड़ना भी है। यह पाठ्यक्रम भाषा, भाव, शैली और विचार के संतुलन को समझने की क्षमता विकसित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- संस्कृत काव्यशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों का परिचय कराना।
- 'साहित्यदर्पण' और 'काव्यप्रकाश' के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से शास्त्रीय चिन्तन की गहराई को समझाना।
- रस, अलंकार, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति आदि के सिद्धांतों का समकालीन संदर्भों में विश्लेषण करना।
- विद्यार्थियों में काव्य-विश्लेषण की प्राचीन पद्धतियों के साथ आधुनिक आलोचना दृष्टिकोण का समन्वय स्थापित करना।
- काव्यशास्त्रीय ग्रंथों के माध्यम से छात्रों की आलोचनात्मक, भाषिक एवं वैचारिक क्षमता को विकसित करना।

इकाई -1 साहित्यदर्ण (प्रथम परिच्छेद)

इकाई 2: काव्यप्रकाश– प्रथम एवं द्वितीय उल्लास

इकाई :3 काव्यप्रकाश– रस स्वरूप

इकाई 4 : (काव्य प्रकाश) नवम एवं दशम उल्लास से अधोलिखित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण तथा दो अलंकारों में परस्पर अन्तर - (अनुप्रास, यमक, श्लेष, दीपक, तुल्ययोगिता, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, समासोक्ति, सन्देह एवं भ्रान्तिमान।

अनुशंसित पठन सामग्री

मूल ग्रन्थ :

1. काव्यप्रकाश-बालाबोधिनी टीका, वामन झल्किकर, सम्पा. रघुनाथ करमकर, भण्डारकर ओरिएण्टल इंस्टिट्यूट, पूना
2. साहित्यदर्पण विश्वनाथ (व्याख्याकार) निरूपण विद्यालंकार, साहित्यभण्डार, मेरठ, 2004
3. साहित्यदर्पण - विश्वनाथ (व्याख्याकार) शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2004
4. काव्यप्रकाश-व्या. आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, सम्पा. डॉ. नगेन्द्र, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1960

सहायकग्रन्थ :

1. काव्यप्रकाश-विवेकानुशीलन, डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2001
2. ध्वनिप्रस्थान में आचार्य मम्मट का अवदान, डॉ. जगदीश चन्द्र शास्त्री, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, शोध प्रकाशन, वाराणसी, 1977
3. राय, विक्रमादित्य. काव्यसमीक्षा, भारतीयविद्याप्रकाशन, वाराणसी
4. De, Sushil Kumar. History of Sanskrit Poetics (also Hindi translation). Oriental Book Centre, Delhi.
5. Dr. Gaurinath Shastri – A History of Classical Sanskrit Literature
6. Kane, P.V. History of Sanskrit Poetics (also Hindi translation), M.L.B.D., Delhi, 2002

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- छात्र काव्यशास्त्र की प्रमुख धाराओं एवं सिद्धांतों को विश्लेषणात्मक रूप में समझ सकेंगे।\
- शास्त्रीय काव्य-तत्वों को आधुनिक साहित्य के उदाहरणों के माध्यम से जोड़ने में सक्षम होंगे।
- संस्कृत साहित्य, आलोचना एवं भाषा-दृष्टि का सशक्त आधार प्राप्त करेंगे।
- तुलनात्मक काव्यशास्त्र की दृष्टि विकसित होगी।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों का** उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

1[ST] SEMESTER
M A SANSKRIT
DSE-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
DSE-01	**व्याकरणः लघुसिद्धान्त कौमुदी**- 1	251/SKT/DS101	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

पाठ्यक्रम विवरण

व्याकरण शास्त्र पर पाठ्यक्रम संस्कृत व्याकरण की गहन खोज प्रदान करता है, जिसमें पारंपरिक और समकालीन दोनों दृष्टिकोण शामिल हैं। व्याकरण छह वेदांगों में से एक है, जो वेदों के अध्ययन से जुड़े सहायक विषय हैं, और संस्कृत ग्रंथों की उचित समझ और संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत व्याकरण के मूलभूत सिद्धांतों, भाषा की संरचना और कार्य, और प्रमुख व्याकरणिक ग्रंथों पर गहराई से चर्चा करता है, जिसमें संस्कृत व्याकरण पर सबसे प्रामाणिक ग्रंथ पाणिनि के अष्टाध्यायी पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- आधारभूत समझः छात्रों को संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों की व्यापक समझ प्रदान करना।
- व्याकरण ग्रंथों का विस्तृत अध्ययनः शास्त्रीय व्याकरण ग्रंथों, विशेष रूप से पाणिनी की अष्टाध्यायी और उनकी टिप्पणियों से जुड़ना, उनकी संरचना और पद्धतियों को समझना।
- व्याकरणिक नियमों का अनुप्रयोगः सही संस्कृत वाक्यों का विश्लेषण और निर्माण करने के लिए व्याकरणिक नियमों को लागू करने की क्षमता विकसित करना।
- तुलनात्मक व्याकरणः संस्कृत व्याकरण और अन्य इंडो-यूरोपीय भाषाओं के व्याकरण के बीच संबंधों का पता लगाना, ऐतिहासिक और भाषाई संदर्भ को समझना।
- भाषाई विश्लेषणः संस्कृत भाषा के भीतर ध्वन्यात्मकता, आकारिकी, वाक्यविन्यास और अर्थविज्ञान सहित भाषाई विश्लेषण में कौशल को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भः भारतीय बौद्धिक परंपराओं के व्यापक संदर्भ में व्याकरण के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व की सराहना करना।

इकाई 1: लघुसिद्धान्तकौमुदी

- ➢ परिभाषाएँसंहिता -, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, संयुक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- ➢ सन्धि अच्सन्धि , हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

- **इकाई 2: समास**
  - समास- अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
  - बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

इकाई 03: कारक प्रकरण(सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

- स्त्री प्रत्यय (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

इकाई 04:

- कृदन्तःतव्य, तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यच्, शतृ , शानच्, क्त्वा, क्त, क्तवतु, ,तुमुन् , ण्वुल्

मूलग्रन्थ :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, धरानन्द शास्त्री (.व्या), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी, महेश सिंह कुशवाहा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी

सहायक ग्रन्थ :

1 लघुसिद्धान्तकौमुदी-भाग) भैमी व्याख्या-1-6), भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली

2. व्याकरण चन्द्रोदय भाग)1-3), चारूदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली

3. कुशवाहा, महेशसिंह, लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग 1-2, चौखम्बादिल्ली।-

4.. शर्मा, गोविन्दप्रसाद .2007. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग 1-3, चौखम्बा प्रतिष्ठानदिल्ली।-

5.. शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, मूल व हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली।

6. लघुसिद्धान्तकौमुदीप्रकाशिका नाम्नी हिन्दी व्याख्या सहिता-, सत्यपाल सिंह, शिवालिक पब्लिकेशन्स, दिल्ली

7. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी गिरिधरशर्माचतुर्वेदएवंपरमेश्वरानन्दशर्मा (टीका-तत्त्वबोधिनी-बालमनोरमा), तृतीयभाग, दिल्ली।

8. गोविन्दाचार्य, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी चतुर्थभागः प्रथमखण्ड), द्वितीयखण्ड(, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,

पाठ्यक्रम के परिणाम:)Learning Outcomes):

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों की गहन समझ रखें।
- अष्टाध्यायी और अन्य महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रंथों को पढ़ने और व्याख्या करने में सक्षम होना।
- संस्कृत ग्रंथों का सटीक विश्लेषण करने और व्याकरणिक रूप से सही वाक्यों का निर्माण करने के लिए व्याकरणिक नियमों को लागू करें।
- भारतीय बौद्धिक परंपराओं में व्याकरण के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को समझें।
- भाषाई विश्लेषण और अन्य भाषाओं के साथ तुलना में कौशल विकसित करना।
- संस्कृत व्याकरण के अध्ययन में शास्त्रीय और समकालीन विद्वानों के योगदान की सराहना करें।

बाहय परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 2 घंटा , **पूर्णांक**- 50

इस प्रश्नपत्र में **कुल 4 प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, **जो 14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष 3 प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 12 अंकों का होगा।** प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल चार प्रश्नों का उत्तर** देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 50 (TE)	**समय 2 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**12 अंक**
तृतीय प्रश्न	**12 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**12 अंक**

SEMESTER- 2
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A04	**भारतीय दर्शन:1**	251/SKT/CC201	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण

कपिल द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक तत्त्वमीमांसा का विवेचन करना और जीवन व मोक्ष की सांख्य दृष्टि को समझना।न्याय दर्शन की मूल संरचना और पद्धति को समझना जैसे—प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि।न्याय और वैशेषिक सिद्धांतों का व्यावहारिक ज्ञान देना, जिससे तात्त्विक और युक्तियुक्त चिंतन कौशल विकसित हो। प्राकृतिक अनुभवों और तात्त्विक ज्ञान के माध्यम से विवेक और मोक्ष की धारणा को आत्मसात करना।

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- छात्र भारतीय दार्शनिक और तर्क पद्धति के परंपरागत ज्ञान स्रोतों को समझेंगे।
- यह अध्ययन उन्हें तात्त्विक विवेक, युक्तियुक्त दृष्टिकोण, और आध्यात्मिक गहराई की ओर प्रेरित करेगा।
- छात्र भारतीय दर्शन के शास्त्रीय ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- भारतीय तात्त्विक दृष्टिकोण को अंतर-शास्त्रीय तथा समकालीन दर्शन के साथ संवाद में ला सकेंगे।

इकाई-1 : **सांख्यकारिका:** दुःखत्रयवाद, प्रमाण, सत्कार्यवाद, प्रकृति का स्वरूप, गुणत्रयस्वरूप, पुरुष का स्वरूप व उसकी सिद्धि

इकाई-2 : **सांख्यकारिका:** सृष्टिप्रक्रिया- भौतिक-सर्ग व प्रत्यय-सर्ग, सूक्ष्मशरीर, बन्ध व मोक्ष

इकाई-3 : **तर्कभाषा:** शास्त्र की त्रिविध प्रवृत्तियाँ, कारण, करण और अन्यथासिद्ध, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द), प्रयाण्यवाद, प्रमेयनिरूपण- आत्मा, दुःख और अपवर्ग के साथ सभी प्रमेय!

इकाई-4 : **तर्कभाषा:** संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा और हेत्वाभास।

अनुशंसित पठन सामग्री

मूल ग्रन्थ:

1.सांख्यकारिका ईश्वरकृष्ण (व्याख्याकार), ब्रजमोहन चतुर्वेदी, नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली,
2. सांख्यकारिका ईश्वरकृष्ण (व्याख्याकार), विमला कर्णाटक, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1984
3. सांख्यकारिका - ईश्वरकृष्ण (व्याख्याकार), राकेश शास्त्री, संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली, 2004
4. तर्कभाषा, डॉ. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,

सहायक ग्रन्थ:

1. Dasgupta, S.N. - History of Indian Philosophy, M.L.B.D., Delhi, 1975
2.Hiriyanna, M. Outline of Indian Philosophy, London, 1956 (also Hindi Translation)
3.उपाध्याय, बलदेव भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी, 2001

पाठ्यक्रमोपरांत अधिगम फल:

- छात्र सांख्य और न्यायवैशेषिक दर्शन की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझ पाएँगे।
- तात्त्विक विवेक और तार्किक विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।
- आधुनिक संदर्भों में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता को पहचान सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों का** उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 2
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A05	**नाट्य साहित्य**	251/SKT/CC202	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम संस्कृत नाट्य साहित्य की प्रमुख रचनाओं एवं नाट्यशास्त्र को समकालीन परिप्रेक्ष्य में समझने का अवसर प्रदान करेगा। इसमें भवभूतिकृत' उत्तररामचरितम्' तथा शूद्रककृत' मृच्छकटिकम्' का गहन अध्ययन कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत नाटकों की काव्यात्मकता, रस, पात्र-निर्माण, सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श और मंचीय पक्षों से परिचित कराना है। साथ ही, यह पाठ्यक्रम छात्रों को आधुनिक रंगमंच, स्त्री विमर्श, सामाजिक न्याय, और साहित्यिक आलोचना के आधुनिक दृष्टिकोणों से जोड़ता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- संस्कृत नाट्य साहित्य की परंपरा, विशेषताओं एवं विकास को समझाना।
- प्रमुख नाटककारों की काव्यशैली, नाट्य शिल्प और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को उजागर करना।
- 'दशरूपक 'के सिद्धांतों को व्यावहारिक नाट्यपाठ से जोड़ते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- नाटकों में सामाजिक, दार्शनिक, राजनीतिक व नैतिक मूल्यों की समकालीन व्याख्या कराना।
- विद्यार्थियों को संस्कृत रंगमंच और नाट्य सिद्धांतों की आधुनिक उपयोगिता से अवगत कराना।

इकाई1 : संस्कृत नाट्य साहित्य की परंपरा

इकाई :2 उत्तररामचरितम् – चयनित अंश (1,3)

इकाई:3 मृच्छकटिकः प्रथम अड्क एवं कथासार

इकाई 4: मृच्छकटिकः: षष्ठ अड्क

अनुशंसित पठन सामग्री

मूल ग्रन्थ :

1. उत्तररामचरितम् (हिन्दी व्याख्या), रामनारायण बेनीमाधव
2. मृच्छकटिक (पृथ्वीधरकृत टीका सहित), निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
3. मृच्छकटिक - विश्वनाथ शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 1999

सहायकग्रन्थ :

1. भवभूति और उनकी नाट्यकला डॉ. आयोध्याप्रसाद सिंह
2. संस्कृत नाट्य सिद्धान्त, डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी
3. **सहायकग्रन्थ :**

1. कीथ, एबी संस्कृतनाटक (अनु उदयभानु सिह), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1965.

2. झा, देवनारायण. नैषध-समीक्षा, नाग पब्लिशर्स. दिल्ली. 2001

3. तिवारी, रमाशंकर. महाकवि शूद्रक , चौखम्बा सुरभारती, बाराणसी ।

4. द्विवेदी , महाबीरप्रसाद. नैषधीयचरितम , गंगा पुस्तकमाला कार्यालय , लखनऊ, 1954

5. शालीग्राम शास्त्री . मृच्छकटिक, शास्त्रीय , सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी ।

6. द्विवेदी. शिवबालक नैषधीयचरित का अभिनव समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन, शिक्षक प्रकाशन, कानपुर, 1981.

7. भरतिया कान्तिकिशोर . संस्कत नाटककार, सचना विभाग, उत्तरप्रदेश. 1959

10. Devasthali, G.V. Introduction to the Study of Mrcchakatika, Popular Prakashan, Bombay

11. Kcith, AB. The Sanskrit Drama, Oxford University ¥Press. 1964

12. Mainkar. T.G. Studies in Dramatic Crilicism.MLBD.Delhi.

13 Mṛicchakaṭika, M.R. Kale, M.L.B.D., Delhi.

14 Dr. Gaurinath Shastri – A History of Classical Sanskrit Literature

15 Law and Practic of Sanskrit Drama by S.N. Shastri

पाठ्यक्रम के परिणाम

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- छात्र संस्कृत नाटकों की शास्त्रीय और व्यावहारिक समझ प्राप्त करेंगे।
- भारतीय नाट्यशास्त्र एवं रंगमंच के ऐतिहासिक विकास को आधुनिक सन्दर्भ में समझ सकेंगे।
- काव्य-रस, पात्र विश्लेषण और संवादशैली का विवेचन करने में सक्षम होंगे।
- पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक सामाजिक विमर्श के बीच संबंध स्थापित कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों का** उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 2
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-3

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cred its	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A06	**महाभाष्य एवं वाक्यपदीयम्**	251/SKT/CC203	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण

व्याकरण शास्त्र पर पाठ्यक्रम संस्कृत व्याकरण की गहन खोज प्रदान करता है, जिसमें पारंपरिक और समकालीन दोनों दृष्टिकोण शामिल हैं। व्याकरण छह वेदांगों में से एक है, जो वेदों के अध्ययन से जुड़े सहायक विषय हैं, और संस्कृत ग्रंथों की उचित समझ और संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत व्याकरण के मूलभूत सिद्धांतों, भाषा की संरचना और कार्य, और प्रमुख व्याकरणिक ग्रंथों पर गहराई से चर्चा करता है, जिसमें संस्कृत व्याकरण पर सबसे प्रामाणिक ग्रंथ पाणिनि के अष्टाध्यायी पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- आधारभूत समझ: छात्रों को संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों की व्यापक समझ प्रदान करना।
- व्याकरण ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन: शास्त्रीय व्याकरण ग्रंथों, विशेष रूप से पाणिनी की अष्टाध्यायी और उनकी टिप्पणियों से जुड़ना, उनकी संरचना और पद्धतियों को समझना।
- व्याकरणिक नियमों का अनुप्रयोग: सही संस्कृत वाक्यों का विश्लेषण और निर्माण करने के लिए व्याकरणिक नियमों को लागू करने की क्षमता विकसित करना।
- तुलनात्मक व्याकरण: संस्कृत व्याकरण और अन्य इंडो-यूरोपीय भाषाओं के व्याकरण के बीच संबंधों का पता लगाना, ऐतिहासिक और भाषाई संदर्भ को समझना।
- भाषाई विश्लेषण: संस्कृत भाषा के भीतर ध्वन्यात्मकता, आकारिकी, वाक्यविन्यास और अर्थविज्ञान सहित भाषाई विश्लेषण में कौशल को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ: भारतीय बौद्धिक परंपराओं के व्यापक संदर्भ में व्याकरण के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व की सराहना करना।

इकाई 01- महाभाष्य

महाभाष्य, पस्पशाह्निक - शब्द का स्वरूप, शब्दार्थ सम्बन्ध

इकाई 02- महाभाष्य

महाभाष्य, पस्पशाह्निक , व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति

इकाई 03- वाक्यपदीयम्

वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, कारिका 1-20

इकाई 04- वाक्यपदीयम्

वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, कारिका 21-43

मूलग्रन्थ :

2. महाभाष्य, भगवत्पतञ्जलिविरचित, प्रदीप-उद्योत सहित, प्रथम भाग, सम्पादक आचार्य वेदव्रत, साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, रोहतक, 1962-63
3. वाक्यपदीयम्, ब्रह्मकाण्डम्, पं० रघुनाथ शर्मा कृत अम्बाकर्जी टीका सहित, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविं वाराणसी, 1997

3. Vākyapadiya of Bhartṛhari, Edited by K.V. Abhyankar and V.P. Limaye, Poona, 19

4. अय्यर, के.ए.एस. भर्तृहरि का वाक्यपदीय, अनुवादक रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1981

5. अवस्थी, शिवशङ्कर वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1997

6. झा, द्रव्येश एवं वेदानन्द झा वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्, पं० द्रव्येश झा-प्रणीत प्रत्येकार्थ-प्रकाशिका, पं०

7. वेदानन्द-झा-विरचित नन्दासूर्यमाया संवलित, मन्दाकिनी संस्कृत विद्वत्परिषद्, दिल्ली

8. मीमांसक, युधिष्ठिर महाभाष्य, प्रथम भाग, प्रथम खण्ड, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत-हरियाणा), द्वितीय संस्करण, 1992

9. वामदेव, आचार्य वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्), कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1997

10. -शर्मा, वीरेन्द्र वाक्यपदीय-सम्बन्धसमुद्देश: एक विवेचनात्मक अध्ययन, होशियारपुर, 1977

11. गौरीनाथ शब्दार्थमीमांसा, (हिन्दी-अनु०) मिथिलेश चतुर्वेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1992

12. व्याकरण-महाभाष्य (नवाह्निक), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली शास्त्री, चारुदेव

13. महाभाष्य-प्रदीप-प्रकाश, परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 1991 शास्त्री, शिवनारायण

14. शुक्ल, सूर्यनारायण वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम), चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1990

सहायक ग्रन्थ :

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी-भाग) भैमी व्याख्या-1-6), भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली

2. व्याकरण चन्द्रोदय भाग)1-3, चारूदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली

3. कुशवाहा, महेशसिंह, लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग 1-2, चौखम्बादिल्ली।-

4.. शर्मा, गोविन्दप्रसाद .2007. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भाग 1-3, चौखम्बा प्रतिष्ठानदिल्ली।-

5.. शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, मूल व हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली।

6. लघुसिद्धान्तकौमुदीप्रकाशिका नाम्नी हिन्दी व्याख्या सहिता-, सत्यपाल सिंह, शिवालिक पब्लिकेशन्स, दिल्ली

7. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (टीका-तत्त्वबोधिनी-बालमनोरमा)गिरिधरशर्माचतुर्वेदएवंपरमेश्वरानन्दशर्मा, तृतीयभाग, दिल्ली।

8. गोविन्दाचार्य, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी चतुर्थभागः प्रथमखण्ड), द्वितीयखण्ड(, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- संस्कृत व्याकरण की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों की गहन समझ रखें।
- अष्टाध्यायी और अन्य महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रंथों को पढ़ने और व्याख्या करने में सक्षम होना।
- संस्कृत ग्रंथों का सटीक विश्लेषण करने और व्याकरणिक रूप से सही वाक्यों का निर्माण करने के लिए व्याकरणिक नियमों को लागू करें।
- भारतीय बौद्धिक परंपराओं में व्याकरण के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को समझें।
- भाषाई विश्लेषण और अन्य भाषाओं के साथ तुलना में कौशल विकसित करना।
- संस्कृत व्याकरण के अध्ययन में शास्त्रीय और समकालीन विद्वानों के योगदान की सराहना करें।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों का** उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 2
M A SANSKRIT
DSE-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
DSE-2	**भाषाविज्ञान एवं अभिलेख**	251/SKT/DS201	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

पाठ्यक्रम विवरण:

भाषाविज्ञान एवं पाण्डुलिपि विज्ञान (भाषाविज्ञान और पाण्डुलिपि विज्ञान) पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा में अंतर्निहित भाषाई सिद्धांतों और प्राचीन पांडुलिपियों के अध्ययन एवं संरक्षण में प्रयुक्त पद्धतियों का एकीकृत अध्ययन प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य संस्कृत भाषाविज्ञान के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं की व्यापक समझ प्रदान करना है, साथ ही पांडुलिपि विज्ञान में व्यावहारिक कौशल, जिसमें पांडुलिपियों का गूढ़वाचन, संपादन और संरक्षण शामिल है, प्रदान करना है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

- छात्रों को संस्कृत भाषा पर लागू भाषा विज्ञान की मूलभूत अवधारणाओं और सिद्धांतों से परिचित कराना।
- पुरालेखविज्ञान, कूटलेखन और पाठ्य-आलोचना सहित संस्कृत पांडुलिपियों के अध्ययन से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान और कौशल प्रदान करना।
- छात्रों को आलोचनात्मक पाठ संपादन की पद्धतियों में प्रशिक्षित करना, जिसमें पांडुलिपि के विभिन्न रूपों का संकलन और मूल ग्रंथों का पुनर्निर्माण शामिल है।
- छात्रों को पांडुलिपियों के संरक्षण और परिरक्षण की तकनीकों से परिचित कराना।
- संस्कृत और भारतीय अध्ययन के व्यापक संदर्भ में भाषाविज्ञान, भाषाशास्त्र और पांडुलिपि अध्ययन के अंतर्संबंधों का अन्वेषण करना।

इकाई 01: भाषाविज्ञान का परिचय

- भाषाविज्ञान का परिचय, भाषा की उत्पत्ति के विविध सिद्धान्त
- ध्वनि- विज्ञान (संस्कृत ध्वनियों का वर्गीकरण, संस्कृत के स्वनिम, संस्कृत के ध्वनिगुण, ध्वनिपरिवर्तन के कारण, प्रमुख ध्वनि नियम, संस्कृत की विभिन्न ध्वनियों का विकास)

- पद-विज्ञान (संस्कृत की पदरचना तथा वाक्य संरचना), वाक्य- विज्ञान (शब्दशक्तियाँ तथा वाक्यार्थविषयक भारतीय सिद्धान्त), अर्थ- विज्ञान (अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और उनके कारण)

इकाई 02: भाषा-परिवार

- भाषाओं का वर्गीकरण, भाषाओं के वर्गीकरण में संस्कृत का स्थान
- भारोपीय भाषा-परिवार का वैशिष्ट्य एवं शाखाएँ
- संसार के प्रमुख भाषा-परिवारों का सामान्य परिचय
- अवेस्ता-संस्कृत तथा वैदिक संस्कृत- लौकिक संस्कृत
- प्राकृत भाषाओं का विकास एवं विशेषताएँ तथा संस्कृत से अन्तःसम्बन्ध

इकाई 03: अभिलेख विज्ञान

- अभिलेख का सामान्य परिचय: अभिलेख शास्त्र का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व।
- अशोक के प्रमुख शिलालेख
- मौर्योत्तरकालीन अभिलेख: सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख,
- गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख: समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर

अनुशंसित पठन सामग्री

सहायक ग्रन्थसूची :

1. भाषाविज्ञान की भूमिका, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. भाषाविज्ञान-कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 1992
4. तुलनात्मक भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974
5. भाषाविज्ञान कोश, भोलानाथ तिवारी, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी
6. संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, विश्वविद्यालय प्रकाशन ट्रस्ट, वाराणसी
7. सामान्य भाषाविज्ञान, बाबुराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग, उ.प्र.
8. भारतीय पुरालिपि शास्त्र, मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसीदास १९६६

9. प्राचीन भारत, राजबली पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन

10. Linguistic Introduction to Sanskrit, V.K. Ghosh, Sanskrit Pustak, Calcutta

11. An Introduction to Sanskrit Linguistics, M. Shreeman Narayan Moorthy, VK Publication, Delhi, 1984

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- संस्कृत भाषा पर लागू होने वाले भाषाई सिद्धांतों की गहरी समझ प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास और शब्दार्थ विज्ञान के विश्लेषण और व्याख्या में कुशल होंगे।
- संस्कृत के ऐतिहासिक और तुलनात्मक पहलुओं और अन्य भाषाओं के साथ उसके संबंध को समझेंगे।
- संस्कृत पांडुलिपियों में प्रयुक्त प्राचीन लिपियों को पढ़ने और समझने में व्यावहारिक कौशल प्राप्त करेंगे।
- ग्रंथों के मिलान और पुनर्निर्माण सहित आलोचनात्मक पाठ संपादन करने में सक्षम होंगे।
- पांडुलिपियों के संरक्षण में संरक्षण तकनीकों और नैतिक विचारों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- पांडुलिपि विज्ञान में प्रयुक्त डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों से परिचित होंगे।
- भाषाविज्ञान और पांडुलिपि अध्ययन को व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों से जोड़ते हुए एक अंतःविषय दृष्टिकोण विकसित करेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 2 घंटा , **पूर्णांक**- 50

इस प्रश्नपत्र में **कुल 4 प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, **जो 14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष 3 प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 12 अंकों का होगा।** प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल चार प्रश्नों का उत्तर** देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 50 (TE)	**समय 2 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**12 अंक**
तृतीय प्रश्न	**12 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**12 अंक**

SEMESTER- 3
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A07	**दर्शन-2**	251/SKT/CC301	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण

प्रस्तुत पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन के प्रमुख सम्प्रदायों का विशेष अध्ययन कराया जायेगा। इस पाठ्यक्रम में आस्तिक और नास्तिक दर्शनों के प्रमुख ग्रन्थों की मुख्य अवधारणाओं को विशेष रूप से पढ़ाया जायेगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों में भारतीय दर्शन के गूढ़ रहस्यों और समस्याओं को समझनें में मदद करेगा।

पाठ्यक्रम उदेश्य

- छात्र अद्वैत वेदान्त और मीमांसा दर्शन के मूलभूत भेद और समानताओं को समझ सकेंगें।
- तात्त्विक एवं तर्कशुद्ध चिंतन में योग्यता प्राप्त कर सकेंगें।
- भारतीय दर्शन की विवेक-प्रवण एवं तर्कशील दृष्टि को आत्मसात कर आधुनिक विमर्शों से जोड़ सकेंगें।
- शास्त्राध्ययन की परंपरा के अनुरूप संस्कृत ग्रंथों को मूल रूप में समझने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।

इकाई 03: वेदान्तसार (सदानन्द) - अधिकारिनिरूपण, वेदान्त, अनुबन्धचतुष्टयनिरूपण, अध्यारोप, अज्ञान का स्वरूप एवं अज्ञान की शक्तियाँ, प्रपञ्चनिरूपण जाग्रदादि तीनों अवस्थाओं एवं शरीरों में व्याप्त पञ्चकोशोपेत अज्ञान की समष्टि एवं व्यष्टि तथा तदुपहित चैतन्यों का निरूपण, सृष्टिप्रक्रिया एवं पञ्चीकरण।

इकाई 04: वेदान्तसार (सदानन्द) आत्मस्वरूप विषयक विप्रतिपत्तियाँ एवं उनका निराकरण, अपवाद, महावाक्यार्थनिर्णय, वृत्ति के कार्य एवं उसके भेद, श्रवण, मनन, निदिध्यासन एवं समाधि, जीवन्मुक्ति एवं विदेहमुक्ति ।

इकाई 03: अर्थसंग्रह (लौगाक्षिभास्कर) धर्म, भावना, वेद की अपौरुषेयता, विधि, गुणविधि और विशिष्टविधि, उत्पत्तिविधि, विनियोगविधि, प्रयोगविधि तथा अधिकारविधि।

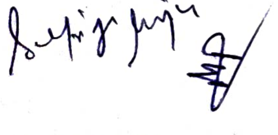

इकाई 04: अर्थसंग्रह (लौगाक्षिभास्कर) मन्त्र, नामधेय, निषेध एवं अर्थवाद, अपूर्वविधि और नियमविधि, परिसंख्याविधि तथा ग्रन्थ के शेष भाग का अध्ययन।

अनुशंसित पठन सामग्री:

मूल ग्रन्थ:

1. वेदान्तसार सदानन्द (व्याख्याकार), सन्तः नारायण श्रीवास्तव, पीयूष प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968
2. वेदान्तसार - सदानन्द (व्याख्याकार), आचार्यबदरी नाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1979
3. वेदान्तसार सदानन्द (व्याख्याकार), आचार्य राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2001

5. अर्थसङ्ग्रह, लौगाक्षि भास्कर, सम्पा. डी. बी. गोखले, ओरियेन्टल बुक एजेन्सी, पूना, 1932

सहायक ग्रन्थ:

1. Dasgupta, S.N. - History of Indian Philosophy, M.L.B.D., Delhi, 1975
2. Hiriyanna, M. Outline of Indian Philosophy, London, 1956 (also Hindi Translation)
3. उपाध्याय, बलदेव भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी, 2001
4. शर्मा, चन्द्रधर भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2010

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- छात्र वेदान्तसार और अर्थसंग्रह जैसे शास्त्रीय ग्रंथों को मूल भाषा (संस्कृत) में पढ़ने, समझने और व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- छात्र वेदान्त (अद्वैत) और मीमांसा दर्शन की मूलभूत अवधारणाओं की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे।
- भारतीय दर्शन की विविध तात्त्विक दृष्टियों के मध्य तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
- छात्र दर्शनशास्त्र में आगे के शोध एवं गवेषणा हेतु सुदृढ़ आधार तैयार कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	समय 3 घंटे
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	14 अंक
द्वितीय प्रश्न	14 अंक
तृतीय प्रश्न	14 अंक
चतुर्थ प्रश्न	14 अंक
पंचम प्रश्न	14 अंक

SEMESTER- 3
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-2

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cred its	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A08	**साहित्यः- हर्षचरित एवं कादंबरी**	251/SKT/ CC302	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण (Course Description):

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत बाणभट्ट-रचित हर्षचरित एवं कादम्बरी का अध्ययन कराया जाएगा। इसमें संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा, बाणभट्ट का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, गद्यशैली, अलंकार-योजना, प्रकृति-वर्णन, चरित्र-चित्रण तथा कथानक-संरचना का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही इन ग्रन्थों में निहित सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक तत्त्वों का अध्ययन भी कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य-साहित्य की परम्परा एवं विकास से परिचित कराना।
- बाणभट्ट के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं गद्यशैली की विशेषताओं का अध्ययन कराना।
- हर्षचरित एवं कादम्बरी में वर्णित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन का परिचय देना।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक सौन्दर्यबोध, व्याख्या-कौशल एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना

इकाई 1: – बाणभट्ट का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- कथा एवं आख्यायिका

इकाई 2: हर्षचरित का पञ्चम उच्छ्वास

इकाई 3: कादम्बरी (कथामुख) - विशेषतः प्रास्ताविकपद्य, शूद्रकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन।

इकाई 4: कादम्बरी (कथामुख) - विशेषतः पञ्चवटीवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन, **शबरसैन्यवर्णन**, हरितवर्णन , जाबालिवर्णन ।

अनुशंसित पठन सामग्री

1. हर्षचरितम्- पं. जगन्नाथ पाठक साहित्याचार्यः, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1, 1946
2. कादम्बरी - देवर्षि सनान्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. कादम्बरी - धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, प्रकाशन केन्द्र, सीतापर रोड. लखनऊ

4. कादम्बरी - भट्टमथुरानाथ शात्री, निर्णयसागर प्रेस. बॉम्बे
5. कादम्बरी - रामस्वरूप शास्त्री, रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद
6. Vasavadatta Louis H.Gray. Columbia University Press, New York, 1913
7. Kadambari P.V. Kane, Oriental Book Agency Pune

सहायकग्रन्थ :

1. अग्रवाल, वामुदवशरण - कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1970
2. पाण्डय, अमरनाथ - बाणभट्ट का साहित्य अनुशीलन, भारतीय विद्या प्रकाशन, बाराणसी, 1974
3. भट्ट, राजेस्वरी - कादम्बरी का काव्यशास्त्रीय अध्ययन, पब्लिकेशन स्कीम जयुपर।

अध्ययन परिणाम:

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरांत विद्यार्थी:

- विद्यार्थी संस्कृत गद्य-साहित्य की प्रमुख विशेषताओं एवं विकासक्रम को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी बाणभट्ट की साहित्यिक शैली एवं गद्यकाव्य-परम्परा का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्यार्थी हर्षचरित एवं कादम्बरी के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का समीक्षात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में संस्कृत गद्य-पाठ, व्याख्या, अनुवाद एवं आलोचनात्मक लेखन की क्षमता विकसित होगी।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	समय 3 घंटे
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 3
M A SANSKRIT
CORE COURSE PAPER-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CCA09	**स्मृति साहित्य**	251/SKT /CC303	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यविवरण:

यह पाठ्यक्रम धर्म, विधि, राजनीति, और आचारशास्त्र से संबंधित संस्कृत धर्मशास्त्रीय ग्रंथों—मनुस्मृति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, तथा याज्ञवल्क्यस्मृति—का शास्त्रसम्मत अध्ययन कराता है। इसके अंतर्गत छात्र प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था, राज्य की नीतियाँ, न्यायप्रणाली, दंडनीति, तथा धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे। यह पाठ्यक्रम शास्त्रों की आधुनिक प्रासंगिकता को भी उद्घाटित करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- धर्मशास्त्रीय परंपराओं एवं उनके ऐतिहासिक विकास को समझाना।
- मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति एवं अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांतों का अध्ययन कराना।
- सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से शास्त्रों का विश्लेषण करना।
- इन ग्रंथों के माध्यम से प्राचीन भारतीय विधि, न्याय एवं शासन प्रणाली को समझना।
- धर्मशास्त्र के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महत्व को विवेचित करना।

इकाई: 1 धर्मशास्त्र का परिचय

- धर्मशास्त्र की परिभाषा, उद्देश्य एवं वर्गीकरण।
- स्मृति ग्रंथों की परंपरा और महत्त्व।
- धर्म, विधि, और न्याय की अवधारणा।

इकाई: 2 अर्थशास्त्र

- कौटिल्य-अर्थशास्त्र के तृतीय अधिकरण के प्रथम दस अध्याय
- कौटिल्य-अर्थशास्त्र के तृतीय अधिकरण के ग्यारहवें अध्याय से बीसवें अध्याय पर्यन्त

इकाई: 3 मनुस्मृति

- मनुस्मृति अध्याय - 7 (राजधर्म) एवं अध्याय 9 – (स्त्रीधन, दाय भाग व्यवस्था)

इकाई: 4 याज्ञवल्क्यस्मृति

याज्ञवल्क्यस्मृति (मिताक्षरा सहित) – II.114-122

अनुशंसित पठन सामग्री

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र - हिन्दी व्याख्यासहित, वाचस्पति गैरोला, बाराणसी।
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र - संस्कृत टीका सहित, संपादक-टी. गणपतिशास्त्री, त्रिबेन्द्रम।
3. पारस्कर गृह्यसूत्रम् - हरिहर 'गदाधर" भाष्यद्वयोपेतम् हिन्दी व्याख्योपेतम्, व्याख्याकार
4. जगदीशचन्द्रमिश्र. चौखम्बा सरभारतीप्रकाशन।
5. पारस्करगृह्यसूत्रम् - आमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
6. कृष्णलाल - गृह्यमूत्र और उनका विनियोग, दिल्ली।
7. Sharma, R. S.-Shudras in Ancicnt India, MLBD. Delhi
8. याज्ञबल्क्यस्मृति, मिताक्षराख्य टीका सहित, सम्पादक डॉ. गंगासागर राय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
9. Apte. V.M.- Social Life in the Grhya Sutras
10. मनुस्मृति, कुल्लूकभट्ट टीकासहित, (सं.) शिवराज आचार्य, विद्याभबन, वाराणसी।
11. मनुस्मृति, कुल्लूकभट्ट टीकासहित, (सं.) हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
12. Bhattacharya, S.C.- Some aspects of Indian Society
13. Buhler, G.- Laws of Manu, (Reprint), MLBD, Delhi, 1964
14. Dumont. Louis - Homo Hicrarchicus
15. Kanc. P.V.- History of Dharma, Estra Vol. L BORL Poona
16. Prablu. P.H.- Hindu Social Organisation
17. Sharma, R.S. and Jha D.N.-India Socicty: Historical Problems
18. Kane, P.V.- History of Dharma, Estra, Vol. L BORL Poona
19. Sen, P.V.- Hindu Jurisprudence
20. Varadachariar, S.- Hindu Judicial System

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- धर्मशास्त्रीय ग्रंथों की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, और कौटिल्य अर्थशास्त्र के तुलनात्मक विश्लेषण में सक्षम होंगे।
- प्राचीन भारत की विधि एवं प्रशासन प्रणाली के शास्त्रीय ढांचे को पहचान सकेंगे।
- समकालीन सामाजिक और विधिक संदर्भों में धर्मशास्त्र की प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

- धर्म, न्याय, और राज्य की अवधारणाओं पर शोध हेतु तैयार होंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 3
M A SANSKRIT
DSE-3

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
DSE-3	**उपनिषद्-साहित्य**	251/SKT/ DS301	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

पाठ्यक्रम विवरण:

यह पाठ्यक्रम भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के मूल ग्रंथों—**उपनिषदों**—से विद्यार्थियों को परिचित कराता है। इसमें ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय तथा श्वेताश्वतर उपनिषदों के दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक आयामों का अध्ययन किया जाता है। पाठ्यक्रम के अंतर्गत आत्मा, ब्रह्म, विद्या, मोक्ष आदि की संकल्पनाओं का विवेचन किया जाता है तथा शास्त्रीय भाष्यकारों (विशेषतः शंकराचार्य) के दृष्टिकोण को भी सम्मिलित किया गया है। यह पाठ्यक्रम उपनिषदों की मूल संस्कृत वाणी के गहन अध्ययन एवं चिंतन के माध्यम से वैदिक दर्शन की मूल आत्मा को समझने का अवसर प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

1. प्रमुख उपनिषदों की दार्शनिक पृष्ठभूमि का ज्ञान कराना।
2. उपनिषदों के माध्यम से आत्मा, ब्रह्म, ज्ञान और मोक्ष की अवधारणाओं का विवेचन।
3. वैदिक दर्शन की मूल अवधारणाओं की व्याख्या में छात्रों की क्षमता का विकास करना।
4. संस्कृत मूल श्लोकों के पाठ और भावार्थ की समझ प्रदान करना।

इकाई 01 : ईशावस्योपनिषद्:

- ईश्वर की सर्वव्यापकता
- कर्म और त्याग का समन्वय
- विद्या और अविद्या की समुच्चय दृष्टि
- कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड का समन्वय

इकाई 02 : कठोपनिषद्:

- **नचिकेतोपाख्यान**
- **यम द्वारा आत्मज्ञान का उपदेश**
- **केनोपनिषद्: कथावस्तु एवं ब्रह्म का सर्वकर्तृत्व**
- **तैत्तिरीय: पञ्चकोश**

इकाई 03 :

- **बृहदारण्यक: मुख्य प्रसंग**
- **बृहदारण्यक: प्रश्नों का स्वरूप**
- **श्वेताश्वतर: जगत्कारणत्व एवं अधिकारी-अनाधिकारी मीमांसा**

अनुशंसित पठन सामग्री

संदर्भ ग्रंथ

1. राधाकृष्णन, एस. (1953)। *द प्रिन्सिपल उपनिषद्स*। लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन।
2. डॉयसेन, पॉल। (1966)। *द फिलॉसफी ऑफ द उपनिषद्स* (अनुवाद: ए. एस. गेडेन)। न्यूयॉर्क: डोवर पब्लिकेशन्स। (मूल जर्मन संस्करण 1906 में प्रकाशित)
3. ओलीवेल, पैट्रिक। (1996)। *उपनिषद्स*। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. शिवानंद, स्वामी। (1991)। *सेलेक्टेड उपनिषद्स पर टिप्पणी*। ऋषिकेश: द डिवाइन लाइफ सोसाइटी।
5. चिन्मयानंद, स्वामी। (1970)। *ईशावास्य उपनिषद् (टीका सहित)*। मुंबई: सेंट्रल चिन्मया मिशन ट्रस्ट।
6. गीता प्रेस। (1950)। *उपनिषद् संहिता (हिन्दी अनुवाद सहित)*। गोरखपुर: गीता प्रेस।
7. शर्मा, रामनाथ। (1980)। *उपनिषद्-प्रवेश*। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
8. उपाध्याय, बालदेव। (1965)। *भारतीय दर्शन*। वाराणसी: चौखम्बा भारती अकादमी।
9. शंकराचार्य, आदि। (1965)। *ईश, केन, कठ उपनिषद् — शंकर भाष्य सहित*। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस।
10. राजस्थान संस्कृत अकादमी। (1975)। *सप्तोपनिषद् (हिंदी व्याख्या सहित)*। जयपुर: राजकीय संस्कृत महाविद्यालय प्रकाशन।

पाठ्यक्रम परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी:

- प्रमुख उपनिषदों की दार्शनिक विषयवस्तु एवं अवधारणाओं को **समझ** सकेंगे।
- मूल संस्कृत श्लोकों का **सार्थक अनुवाद और व्याख्या** करने में सक्षम होंगे।
- आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, विद्या आदि प्रमुख दार्शनिक संकल्पनाओं का **विश्लेषण** कर सकेंगे।
- उपनिषदों के विचारों का **भारतीय दार्शनिक परंपरा और वैश्विक चिंतन** में योगदान को समझ सकेंगे।
- शंकराचार्य आदि परंपरागत भाष्यकारों के दृष्टिकोण के माध्यम से ग्रंथों की **गूढ़ व्याख्या** कर सकेंगे।
- उपनिषदों की शिक्षाओं को **आधुनिक जीवन और नैतिक समस्याओं** के समाधान में **प्रासंगिक रूप से लागू** कर सकेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 2 घंटा , **पूर्णांक**- 50

इस प्रश्नपत्र में **कुल 4 प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, **जो 14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष 3 प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 12 अंकों का होगा।** प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल चार प्रश्नों का उत्तर** देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 50 (TE)	**समय 2 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**12 अंक**
तृतीय प्रश्न	**12 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**12 अंक**

SEMESTER- 4
M A SANSKRIT
CORE COURSES PAPER-1

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CCA10	दर्शन-3	251/SKT/ CC401	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण:

इस पाठ्यक्रम में पातञ्जलयोगसूत्र के मूल सूत्रों के साथ-साथ व्यासभाष्य का समन्वित अध्ययन किया जाएगा, जिससे योगदर्शन की गहराई से समझ संभव होगी। साथ ही, वेदान्त दर्शन के मूल ग्रंथ ब्रह्मसूत्र के प्रथम अध्याय के पहले पाद (१.१) का गहन अध्ययन कराया जाएगा, जिसमें वेदान्त के सिद्धान्तों की दार्शनिक व्याख्या होती है।

पाठ्यक्रम में योग और वेदान्त के तुलनात्मक दृष्टिकोण, उनकी तात्त्विक पृष्ठभूमि, साधन, और मोक्ष की अवधारणा आदि का विश्लेषण भी शामिल रहेगा।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- पातञ्जलयोगसूत्र के दर्शनिक मूल्यों को व्यासभाष्य सहित समझाना।
- ब्रह्मसूत्र १.१ के सूत्रों की शांकरभाष्य के आलोक में व्याख्या करना।
- योग और वेदान्त दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन कराना।
- भारतीय दार्शनिक परंपरा में योग और वेदान्त के स्थान को स्पष्ट करना।
- छात्रों को शास्त्रीय तर्कशक्ति, भाष्य अध्ययन कौशल, और दार्शनिक गहराई से परिचित कराना।

इकाई-1 :

- समाधिपाद- चित्तभूमियाँ व चित्तवृतियाँ, प्रमाणमीमांसा, वृतिनिरोध के उपाय, ईश्वर का स्वरूप, सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात समाधि

इकाई-2 :

- जात्यन्तरपरिणाम, निर्माणचित्त, चतुर्विधकर्म, जीवन्मुक्ति, धर्ममेघसमाधि व कैवल्यस्वरूप
- ब्रह्मसूत्र (१.१)

इकाई-३ : अध्यासभाष्य

इकाई-४ : जिज्ञासाधिकरण

अनुशंसित पठन सामग्री

मूल ग्रन्थ:

2, ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुःसूत्री) (व्याख्याकार) आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1966

2. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुःसूत्री) (व्याख्याकार) रमाकान्त त्रिपाठी, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1979

3. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (व्याख्याकार) कामेश्वरमिश्र, चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, वाराणसी, 1976

4. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य भामती टीका अनुवाद सहित (सम्पादक), स्वामी योगीन्द्रानन्द, षड्दर्शनप्रकाशन, वाराणसी, 1982.

5.पातञ्जलयोगदर्शनम् - पतञ्जलि, (व्याख्याकार) सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1993

6.पातञ्जलयोगदर्शनम् पतञ्जलि, (व्याख्याता) स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974

7.योगसूत्रम् - पतञ्जलि, (अनुवादक) रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1985

सहायकग्रन्थ :

1.योगसूत्रम् - पतञ्जलि, (अनुवादक) रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1985

2. Deussen, Paul Philosophy of Upanishads, Education Enterprise, Calcutta, 1972

3. Dasgupta, S.N. - History of Indian Philosophy, M.L.B.D., Delhi, 1975

4.Hiriyanna, M. Outline of Indian Philosophy, London, 1956 (also Hindi Translation)

5.उपाध्याय, बलदेव भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर, वाराणसी, 2001

6.शर्मा, चन्द्रधर भारतीय दर्शन: आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2010

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- पाठ्यक्रम समाप्ति पर छात्र भारतीय दर्शन की शास्त्रीय व व्यावहारिक समझ विकसित करेंगे।
- भारतीय दर्शन और उसके विकासक्रम को आधुनिक सन्दर्भ में समझेंगे।

- भारतीय दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं व समस्याओं की समझ विकसित करेंगे।
- भारतीय दार्शनिक शास्त्रों का आलोचनात्मक व तुलनात्मक विश्लेषण की योग्यता प्राप्त करेंगें।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER- 4
M A SANSKRIT
CORE COURSES PAPER-2

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
CC-A11	**काव्यशास्त्र 2: ध्वन्यालोक एवं काव्यप्रकाश**	251/SKT/ CC402	3	1	0	3	1	0	4	30	70	0	0	100

पाठ्यक्रम विवरण :

काव्यशास्त्र-2 के अन्तर्गत संस्कृत काव्यशास्त्र की प्रमुख परम्पराओं एवं सिद्धान्तों का अध्ययन कराया जाता है। इस पाठ्यक्रम में विशेष रूप से ध्वन्यालोक तथा काव्यप्रकाश के माध्यम से ध्वनि-सिद्धान्त, रस, अलंकार, गुण, रीति तथा व्यञ्जना-शक्ति के स्वरूप का विवेचन किया जाता है। विद्यार्थियों को काव्य के सौन्दर्य-बोध, शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति की सूक्ष्मताओं से परिचित कराया जाता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में समालोचनात्मक दृष्टि, साहित्यिक संवेदनशीलता तथा शोधपरक अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करने में सहायक है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- ध्वनि-सिद्धान्त एवं काव्य-तत्त्वों की मूल अवधारणाओं को समझाना।
- विद्यार्थियों को संस्कृत काव्यशास्त्र की आलोचनात्मक एवं सौन्दर्यपरक दृष्टि से परिचित कराना।
- काव्य में रस, गुण, रीति, अलंकार एवं व्यञ्जना के प्रयोग का अध्ययन कराना।
- प्राचीन काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों को आधुनिक साहित्यिक समीक्षा से जोड़ने की क्षमता विकसित करना।

इकाई-1: काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास

- भरत, भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, क्षेमेन्द्र, मम्मट, विश्वनाथ
- विभिन्न सम्प्रदाय

इकाई-2: ध्वन्यालोक – प्रथम उद्योत

इकाई-3: - काव्यप्रकाश– पञ्चम उल्लास

इकाई-4: छन्दशास्त्र

- अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, वसन्ततिलका, शिखरणी, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता, स्रगधरा,

अनुशंसित पठन सामग्री

1. मम्मटाचार्य. (2009). काव्यप्रकाश (डॉ. शिवकुमार सिंह द्वारा हिंदी टीका सहित). वाराणसी: चौखम्भा सूरभारती प्रकाशन।
2. आनन्दवर्धन. (2012). ध्वन्यालोक (डॉ. गोपीनाथ कविराज द्वारा हिंदी भाष्य सहित). वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन।
3. डॉ. रामचन्द्र तिवारी. (2001). संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल. (1992). संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास. दिल्ली: साहित्य भवन।
5. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी. (2010). भारतीय काव्यशास्त्र. दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
6. नागेश भट्ट. (2005). छन्दोमञ्जरी (हिंदी व्याख्या सहित). वाराणसी: चौखम्भा ओरिएण्टलिया।
7. डॉ. गोवर्धन शर्मा 'कांत'. (2008). अलंकार शास्त्र. वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरीज कार्यालय। केलकर, आशालता। (1998)। *संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
8. देव, नागेन्द्रनाथ। (1992)। *भारतीय काव्यशास्त्र*। वाराणसी: भारती साहित्य संस्थान।
9. पंडित, विश्वनाथ शर्मा। (2005)। *छन्दशास्त्र प्रवेशिका*। जयपुर: राजस्थान संस्कृत अकादमी।
10. शुक्ल, हजारीप्रसाद। (1959)। *काव्य में रस*। प्रयाग: लोकभारती प्रकाशन।
11. कपूर, हरिनारायण। (2004)। *अलंकार शास्त्र का विवेचनात्मक अध्ययन*। लखनऊ: भारती पुस्तक भवन।

पाठ्यक्रम परिणाम:

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर विद्यार्थी:

- विद्यार्थी ध्वनि-सिद्धान्त एवं काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत काव्य के रस, अलंकार एवं व्यञ्जना-तत्त्वों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी ध्वन्यालोक तथा काव्यप्रकाश के प्रमुख सिद्धान्तों की तुलनात्मक समीक्षा कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में साहित्यिक सौन्दर्य-बोध, आलोचनात्मक दृष्टि एवं शोधपरक अध्ययन की क्षमता विकसित होगी।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 3 घंटा , **पूर्णांक**- 70

इस प्रश्नपत्र में **कुल पाँच प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, जो **14 अंकों** का होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक स्वरूप का हो सकता है। **शेष चार प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक प्रश्न **14 अंकों का** होगा। प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल पाँचों प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 70 (TE)	**समय 3 घंटे**
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**14 अंक**
तृतीय प्रश्न	**14 अंक**

चतुर्थ प्रश्न	**14 अंक**
पंचम प्रश्न	**14 अंक**

SEMESTER-4
M A SANSKRIT
DSC-4

Cours e Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Cred its	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
DSE-4	**शोध विज्ञान**	251/SKT/ DS401	2	1	0	2	1	0	3	25	50	0	0	75

पाठ्यविवरण:
यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शोध की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों, पद्धतियों, और तकनीकों से परिचित कराता है। विशेष रूप से संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में शोध लेखन की पद्धति, स्रोतों की पहचान, ग्रंथों की समालोचना, टिप्पण लेखन, उद्धरण शैली, और अनुसंधान विषय के चयन की विधियाँ इसमें सम्मिलित हैं। यह पाठ्यक्रम पारंपरिक और आधुनिक दोनों शोध दृष्टिकोणों का समन्वय करता है।

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- शोध के उद्देश्य, स्वरूप एवं क्षेत्र का ज्ञान कराना।
- शोध विषय चयन की प्रक्रिया एवं पद्धतियों को स्पष्ट करना।
- शास्त्रीय ग्रंथों की समालोचना, संपादन और टीका-पद्धति का परिचय देना।
- शोध रिपोर्ट (Thesis/Dissertation) के निर्माण की संरचना सिखाना।
- आधुनिक अनुसंधान उपकरण (जैसे ग्रंथसूची, उद्धरण पद्धति, डेटा संग्रहण) से परिचय कराना।

इकाई 1:– **शोध का स्वरूप और उद्देश्य**
- शोध की परिभाषा, लक्षण एवं प्रकार
- शोध में समस्या का चयन
- अनुसंधान का क्षेत्र और विधाएँ (साहित्य, व्याकरण, दर्शन, इतिहास आदि)
- ग्रंथवाचन, टीका, भाष्य, व्याख्या की पद्धतियाँ

इकाई 2 : – **आधुनिक शोध प्रविधियाँ**
- सन्दर्भ सूची (Bibliography), ग्रंथसूची का निर्माण
- उद्धरण प्रणाली (MLA, Chicago, IAST, आदि)
- विषय सूची, ग्रंथ अनुक्रमणिका, और शोध की भाषा

- ऑनलाइन डेटाबेस, कोश, डिजिटल पाण्डुलिपियाँ

इकाई 3 :– शोध लेखन कौशल

- शोध प्रबंध / निबंध की रचना प्रक्रिया
- प्रस्तावना, उद्देश्यों की स्पष्टता, अध्याय विभाजन
- शोध में मौलिकता और स्रोत विश्लेषण
- शोध में Plagiarism की अवधारणा एवं निवारण

अनुशंसित पठन सामग्री

1. शोध प्रविधि – डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल
2. Research Methodology – Kothari, C.R.
3. An Introduction to Research Methodology – Garg, B.L.
4. Sanskṛta Sāhitya Meṃ Anusandhāna – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
5. Textual Criticism and Editorial Techniques – T. Ganapati Sastri
6. Prachya Vidya aur Sanskrit Shodh – डॉ. रामकरण शर्मा

पाठ्यक्रम के परिणाम:

इस पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद, छात्र:

- शोध विषय की पहचान एवं उसका निर्धारण कर सकेंगे।
- पारंपरिक एवं आधुनिक शोध पद्धतियों का उपयुक्त प्रयोग कर सकेंगे।
- शोध प्रबंध की संरचना एवं शैली में दक्षता प्राप्त करेंगे।
- ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- संस्कृत विषयों में स्वतंत्र अनुसंधान के लिए सक्षम बनेंगे।

बाह्य परीक्षक के लिए निर्देश:

- **परीक्षा समय** - 2 घंटा , **पूर्णांक**- 50

इस प्रश्नपत्र में **कुल 4 प्रश्न** होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा, **जो 14 अंकों का** होगा तथा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होगा। यह प्रश्न **वस्तुनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक** स्वरूप का हो सकता है। **शेष 3 प्रश्न** पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों से पूछे जाएँगे तथा प्रत्येक **प्रश्न 12 अंकों का होगा।** प्रत्येक प्रश्न के आन्तरिक विकल्प उपलब्ध रहेंगे। विद्यार्थियों को **कुल चार प्रश्नों का उत्तर** देना अनिवार्य होगा।

कुल अंक – 50 (TE)	समय 2 घंटे
प्रथम प्रश्न (अनिवार्य)	**14 अंक**
द्वितीय प्रश्न	**12 अंक**
तृतीय प्रश्न	**12 अंक**
चतुर्थ प्रश्न	**12 अंक**

सेमिनार कोर्स:

सेमिनार कोर्स मूल रूप से एक अंतःविषयक कोर्स है जिसे छात्रों के लिए उनके प्रस्तुतिकरण और लेखन कौशल को समृद्ध करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। संकाय, साथियों के साथ महत्वपूर्ण जुड़ाव उन्हें अपने शोध और शोध प्रबंध के लिए विषयों को चार्ट करने में मदद करेगा। इस कोर्स का एक उद्देश्य उन्हें उनके चुने हुए विषयों की कार्यप्रणाली के बारे में जागरूक करना है। यह उन्हें अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन और वाद-विवाद में भाग लेने में मदद करेगा।